ISSN : 2455-1503

सूचना क्रांति और कुरमी/महतो महिलाओं पर इसका प्रभाव

ममता कुमारी, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोध सार :

सूचना क्रांति के विकास ने भारत को एक नये डिजिटल युग में प्रवेश करा दिया है। इसने मनुष्य के लिए अवसरों के नये द्वार खोल दिये हैं, जिसकी बदौलत ज्ञान अर्थव्यवस्था के तहत व्यक्ति समद्धि और धनोपार्जन कर सकता है। नयी सहस्राब्दि ने दुनिया भर में ज्ञान क्रांति के जरिये अंतरनिर्भरता का बोध बढ़ाया है जिससे भूमंडलीय अंतरसंवाद व्यापक, सघन, त्वरित तथा प्रभावी हुआ है ं। इससे वैश्विक शक्ति की संरचना में व्यापक परिवर्तन आया है। विश्व बैंक की 1999 में जारी की गई रिपोर्ट से भी इस बात की पुष्टि होती है कि अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण केवल भौतिक पूंजी और मानव कौशल इकटठा कर लेने भर से नहीं होता, बल्कि सूचना, अधिगम तथा स्वीकरण की बुनियाद पर होता है। प्रौद्योगिकी विकास की केंद्रीय वस्तु ज्ञान है। विकास की शुरूआत करने और उसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए तकनीकि ज्ञान, गुणवता का ज्ञान, विषयवस्तु का ज्ञान, अधिगम हासिल करने के तरीके का ज्ञान तथा इसके सदुपयोग का ज्ञान जैसे विभिन्न रूपों के ज्ञान को समिन्वत किया जा रहा है, परन्तु ज्ञान निरपेक्ष नहीं होता बल्कि इसके सामाजिक यर्थाथ भी होते हैं, जिसमें प्रायः निर्धनों और महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान की उपेक्षा कर दी जाती है। भूमण्डलीकरण के कारण आई सूचना क्रांति से पिछड़ी जाति के परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर जहां एंक ओर सकारात्मक प्रभाव पडा है तो वहीं दूसारी ओर इसका नकारात्मक प्रभाव एवं इनमें सामाजिक विघटन भी देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव के कारण पिछड़ी जाति समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति तीव्र हुई है, वहीं नकारात्मक प्रभाव के कारण इनके समाज में कई समस्या उत्पन्न हो गई है।

विषय स ंक ेत :

कुरमी/महतो महिलाएं, पिछड़ी जाति, भूण्मडलीकरण, सूचना क्रांति, वैज्ञानिक तकनीक परिचय परिवर्तन में महत्वपूण ं भूमिका निभाने वाले इस सूचना युग को संचालित करने वाली शक्तियों में दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं के भूमंडलीकरण के कारण सभी स्तरों पर प्रतिस्पर्धा में व्यापक वद्धि, प्रौद्योगिकी, खासकर नेट और दूरसंचार प्रौद्योगिकी में तीव्र परिवर्तन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध कार्य में निवेश में

रूची, कौशल परिवर्द्धन की मांग, बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण को लेकर बढ़ती चिंता, ज्ञान आधारित व्यापार का विकास, सहभागी कार्य संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता में वास्तविक वद्धि और नेटवक्रिंग नीतियों में तीव्र प्रगति जैसे कारक इसके मुख्य वाहक हैं। विगत पांच दशकों में एशिया के जिन अग्रणी देशों में ज्ञानार्जन तथा ज्ञान सजन में निवेश किया है उन्होंने अन्य देशों के मुकाबले तीव्र प्रगति की, उनके अनुभवों से यह सीख अन्य देशों को मिली की ज्ञान सजन अर्जन और इसके प्रयोग की वर्त्तमान विकास में कितनी उपयोगिता है? इस प्रक्रिया में पहला कदम आंकड़ों तथा सूचना तक पहुंचना है। एक बार लोगों को आंकड़े और सूचनाएं उपलब्ध हो जाएं तो लोग उन्हें अर्जित करेंगे, उनका अपने निजी अनुभवों के साथ संयोजन एक अर्थपूर्ण स्वरूप प्रदान करेंगे। आंकड़ों का संसाधन स्रोत की निकटता, उसकी विश्वसनीयता, संचार तंत्र के साथ–साथ इस आस्था पर निर्भर करता है कि उक्त सूचना उनके लिए उपयोगी होगी, सूचना के संयोजन के लिये लोगों के पास कुछ विषेश कौशल होना चाहिए। संयोजित सूचना को ज्ञान के तौर प्रसारित किया जाता है, ताकि सामाजिक उददेश्यों हेतु योजना बना कर उन्हें कार्यान्वित किया जा सके। सकारात्मक प्रभाव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग से उपयोगी सूचना सुदूरवर्ती गांवों में रहने वाले लोगों तक पहुंचती है, इससे न केवल उनकी जागरूकता में इजाफा होता है, बल्कि उनकी अपेक्षाएं भी बढती हैं।

संदर्भ ग्रंथ– सूची

1 बेसरा, बासुदेव, 1973, ए प्रोग्राम फोर रिसर्च ऑन मैन`जमेंट इनफॉरमेंशन सिस्टम, मैनेजमेंट साइंस।

2 क्रिसमैन रिजले, 1996, अंडरस्टैंडिंग डेवलपमेंट, लाइन रियेनर, बाउल्डर।

3 बेजामीन डिजराइली, 1986, ए स्टडीज इन ग्लोबलाइजेशनः इंटरनल एण्ड इंटरनेशनल माइग्रेसन इन इंडिया, दिल्ली मनोहर पब्लिकेशन।

4 अंगूरा सैम्यूअल, 1979, द रेशनल पीजेंट, यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्केले,

5 बेलोज सी डेविस, 1962, टूआर्डस ए थियरी ऑफ रिवोल्यूशन, अमेरिकन सोसियोलॉजिकल रिव्यू, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, येल।